अमर उजाला

Kanpur, Sunday, 10.01.2021

जिसे समझे मृत, 11 साल बाद लौटा

मुंबई के एक एनजीओ की टीम कर्नलगंज स्थित घर लेकर आई

माई सिटी रिपोर्टर

एनजीओ की टीम नईम को लेकर उसके घर पहुंची। संवाद न्यूज एजेंसी

कानपुर। कई बार छोटे-छोटे प्रयास किसी के लिए बड़ी खुशियों का रूप ले लेते हैं। शनिवार को ऐसा ही उदाहरण कर्नलगंज स्थित छोटे मियां के हाते में देखने को मिला। 11 साल से लापता मानसिक रूप से बीमार जिस शख्स को परिजन मृत समझ बैठे थे, मुंबई के एक एनजीओ की टीम उसे लेकर अचानक घर पहुंच गई। उसे देखकर घर वालों के आंसू बह निकले।

छोटे मियां हाता निवासी नईम (45) अपने आठ भाइयों, मां व तीन बहनों के साथ रहते थे। 2003 में घर की जर्जर छत गिरने से तीन भाइयों, मां रशीदा बेगम व एक बहन की मौत हो गई थी। नईम के सिर पर भी चोट आने से याददाश्त चली गई थी। भाई मो. नसीम ने बताया कि तब उनके बड़े भाई का छह साल तक इलाज कराया। 2009 में सुधार होने पर वे हैदराबाद एक चप्पल कारखाने में काम करने चले गए। तब उनकी उम्र 34 साल रही होगी। इसके बाद से उनका कुछ पता नहीं चला। वे तो भाई के जिंदा होने की उम्मीद भी खो चुके थे। वहीं, मार्च 2020 में नईम सायन एरिया में भटकते हुए मुंबई की श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन की टीम को मिले। श्रद्धा संस्था के फाउंडर ट्रस्टी डॉ. भरत वाटवानी ने उनका 11 महीनों तक इलाज किया। हालत में सुधार हुआ तो उन्होंने घर का पता व अपना नाम बताया। शनिवार को संस्था से जुड़े मनोवैज्ञानिक शैलेश शर्मा टीम के साथ एंबुलेंस से नईम को लेकर घर पहुंच गए। संस्था के शैलेश शर्मा ने बताया कि नईम को निशुल्क दवाएं आगे भी भेजी जाती रहेंगी।